शोध पत्र- राजनीति शास्त्र

दलित साहित्य के प्रेरणा स्त्रोत डॉ. भीमराव आम्बेडकर

* डॉ. सदन मरावी ** कु. गौतमा बागडे

डॉ0बाबा साहेब आम्बेडकर प्रथम महापुरुष थे जिन्होंने दलितो में चेतना पैदा की अन्याय के खिलाफ संघर्ष के लिए प्रेरित किया सदियों से दलितो के लिए बंद शिक्षा के द्वार खोले दलितों को मानव अधिकार दिलाकर उनको इंसानों की पंक्ति में खडा किया।

दलित साहित्य दलितोत्थान हेतु लिखा गया एक ऐसा साहित्य हैं, जो भोगे हुए सच पर आधारित हैं। जमीन से जुडे शोषित उपेक्षित सर्वहारा वर्ग से संबंधित है जो दशा और दिशा को इंगित करता है और जिसमें विद्रोह और उदबोधन के साथ–साथ संवेदना जाग्रत करने की उर्जा हैं। दलित साहित्य कोरी कल्पनाओं, अंधविश्वासों पर आधारित या देव प्रदत्त साहित्य नहीं है यह वैज्ञानिक सत्य पर आधारित जमीन से जुडे लोगों के भोगे गए जीवन से जुडा साहित्य हैं, जिसमें उत्पीडन, असामानता, अन्याय, अपमान के विरूद्ध खुला विरोध हैं। धर्मान्धता में डूबे अविवेकी लोगों की संकीर्णता दूर कर उनकी संवेदना जगाकर उनमें स्वाभिमान जाग्रत करने की उर्जा हैं, वही समाज में समरसता, भ्रातृत्व, समादरता स्थापित करता हैं

साहित्य का अर्थः–

जो हित करें ''यानि जो हितकारी हो कल्याणकारी हो'' इस आधार पर दलित साहित्य ही खरा उतरता हैं। दलित शब्द जब साहित्य के साथ मिल जाता हैं तो साहित्य को एक विशिष्टता प्रदान करता हैं। यह साहित्य को एक पृथक अधिकार प्रदान करता हैं और एक नई पहचान से परिचित करता हैं। साहित्य के साथ दलित शब्द मिलकर वह दलित साहित्य बन जाता हैं, जो 15 प्रतिशत शोषकों का साहित्य न रहकर धरती से जुडे 85 प्रतिशत लोंगों का प्रतिनिधि साहित्य कहलाता हैं दलित साहित्य एक ऐसा साहित्य है जो सभी तरह की वर्ण व्यवस्था जात–पात, उंच–नीच भेदभाव के दायरे से उपर है और जिसे धर्म, भाषा, और प्रदेश की सीमाओं में नहीं बाधा जा सकता हैं।

दलित साहित्य क्या है:–

दलित साहित्य को जानने के लिए सबसे पहले यह जानना जरूरी है कि दलित कौन हैं ? दलित साहित्य क्या हैं? ये बाते स्पष्ट होने पर ही हम दलित साहित्य और उसकी आवश्यकता और सार्थकता को आसानी से समझ सकेंगे।

दलित वह हैं जिसका दलन किया गया हो, दबाया गया हो, कुचला गया हो। समाज में जो वर्ग हजारों वर्षो से सताया जा रहा हैं। मानवीय अधिकारों से वंचित रखा गया हैं, जिसे निजी स्वार्थो के लिए मानव निर्मित झूठी, बर्बर मान्यताओं को मनुस्मृति और धर्म के नाम पर स्वीकारने के लिए बाध्य किया गया हो, वह दलित हैं।

डॉ0 आम्बेडकर के अनुसारः–

''दलित साहित्य क्रांति कारी साहित्य हैं दलित साहित्य डॉ0आम्बेडकर के संघर्ष को आगे बढाने वाला आन्दोलन हैं केवल सामाजिक सुधार और आर्थिक समानता के लिए यह आन्दोलन नहीं है बल्कि व्यक्ति और पर्याय से समाज में आमूल–चूल परिवर्तन के लिए भी है''

जब प्राचीन काल से ही साहित्य उपलब्ध हैं तो दलित साहित्य की आवश्यकता क्यों पडीं ? जब हम प्राचीन काल से उपलब्ध साहित्य का अध्ययन करते है, तो पाते है कि ये सभी साहित्य कार वर्ण व्यवस्था और जात पात के ताने बाने में उलझे है और सवर्ण मानसिकता तक सीमित हैं उनमें से किसी में भी मनुस्मृति की अमानवीय धारणाओं के विरूद्ध कुछ भी बोलने या लिखने का साहस नही है वे कोरी कल्पनाओं के छायावाद पर साहित्य रचते हैं। ऐसी स्थिति के समाज में उपेक्षित, उत्पीडित और अपमानित दलित वर्ग के लिए सिर्फ यही एक मार्ग रह जाता हैं कि वह अपने उत्थान और विकास एवं कल्याण के लिए अपनी अलग पहचान वाले साहित्य की रचना करें। आज धरती से जुडे दलित को केन्द्रित करके अपने छिने हुए मानवीय अधिकार प्राप्त करने के लिए संघर्ष को सामने रखकर समता, स्वतंत्रता, सम्मान और न्याय हेतु देश के सभी प्रदेशों में दलित साहित्य लिखा जा रहा हैं। दलित साहित्य के उदभव से एक नई वैचारिक क्रांति फैल रहीं है। दलित अन्याय, अपमान, और असमानता के खिलाफ हैं। डॉ0 आम्बेडकर के मूल मंत्र ''शिक्षित बनों, संगठित हो, संघर्ष करों'' को सामने रखकर देश की दासता में एक आन्दोलन चल रहा हैं। डॉ0 बाबा साहब आम्बेडकर ने कहा था कि ''गुलाम को उसकी गुलामी का एहसास करा दो देखना फिर वह गुलामी की जंजीर तोड देगें।'' बाबा साहब की प्रेरणा से ही दलितों के शिक्षित युवाओं ने ब्राम्हण वादी वयवस्था को नकारते हुए दलितों में से संर्कीणता निकालकर उनमें स्वाभिमान और चेतना जाग्रत करने के लिए लिखना शुरू किया।

दलित साहित्य साहित्य की सभी कसौटियों पर खरा उतरने के कारण वास्तविक और असली साहित्य हैं, यह साहित्य के सभी गुणों से भरपूर हैं। दलित साहित्य 85 प्रतिशत बहुजन का साहित्य होने के कारण पूरे साहित्य का असली दर्पण होने के नाते सच्चा साहित्य हैं दलित साहित्य जीवन की सत्यता, बहुजन कल्याण, और धरती से जुडे लोगों सरल, निर्मल , निश्चल मन के सौदर्य से परिपूर्ण हैं ।

दलित साहित्य एवं डॉ0 आम्बेडकर–

बाबा साहेब डॉ0भीमराव आम्बेडकर ने ''मूक नायक'' पत्र प्रारंभ किया इसके माध्यम से उन्होने दलित के स्वाभिमान को जगाया और देश की सत्ता और सम्पदा में उनकी बराबर की हिस्सेदारी के लिए संघर्ष की प्रेरणा दी। सदियों से अज्ञान, अपमान, और सोए हुए दलितों की संवेदनाए जाग्रत की और उन्हें उनके अधिकारों से परिचित करातें हुए उन्हें हासिल करने का मार्ग सुझाया ''शिक्षित बनों, संगठित हो, और संघर्ष करों''। डॉ0आम्बेडकर द्वारा आरंभ किया गया ''जनता'' साप्ताहिक समाचार पत्र दीर्घकाल तक चलता रहा जिसनें दलित समाज में विचार क्रांति का सूत्रपात किया और डॉ0आम्बेडकर के संदेश को गांव–गांव घर–घर तक पंहुचाने का कार्य किया। डॉ0बाबा साहब आम्बेडकर की विचारधारा को अपना कर दलित लेखकों ने दलित साहित्य लिखना आरंभ किया और दलित आन्दोलन आरंभ किया इस आन्दोलन को आगे बढाने में दलित साहित्यकारों की प्रमुख भूमिका रहीं हैं।

दलित साहित्य की प्रेरणा आम्बेडकर वादी विचारधारा हैं क्योंकि डॉ0आम्बेडकर के विचारों और आन्दोंलन से दलित समाज को स्वाभिमान मिला हैं।डॉ0आम्बेडकर ने मानवतावाद को सर्वोच्च स्थान दिया हैं। डॉ0आम्बेडकर प्रेरित दलित साहित्य ने मनुष्य को केंन्द्र माना हैं मनुष्य की स्वतंत्रता के लिए घोषणा की हैं। मानव की मुक्ति को प्रोत्साहित करने वाला मनुष्य को महान मानने वाला वंश, वर्ण , जाति श्रेष्ठतव का विरोध करने वाला साहित्य ही दलित साहित्य होता हैं। मनुष्यता दलित साहित्य का धर्म हैं इसलिए इस संसार में मनुष्य की अपेक्षा और कोई भी काल्पिनिक या सांसारिक वस्तु महान नहीं है। जो संस्कृति, समाज या साहित्य मनुष्य को छोटा बनाता हैं, और निम्न समझता हैं उसके विरूद्ध दलित साहित्य विद्रोह करता हैं यह विद्रोह डॉ0आम्बेडकर विचार प्रणाली का अविभाज्य अंग हैं। दलित साहित्य की समीक्षा डॉ0आम्बेडकर विचार से करनी होगी।

निष्कर्ष–

डॉ0आम्बेडकर का अवतरण एक ऐसे महान पुरूष के रूप में हुआ जिसमें दलित, शोषित, और उत्पीडित समाज में न केवल जन चेतना जाग्रत की बल्कि उनकी ताकत का ऐहसास कराया। आज दलितों को बराबर का वोट का अधिकार दिलाया। शिक्षा संस्थानों सरकारी सेवाओं और संसदीय प्रणाली में अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति का आरक्षण कोटा निश्चित कराया आज शाासन सत्ता, संस्थाओं के उच्च पदों पर जो दलित आसीन हैं वह सब बाबा साहेब आम्बेडकर की ही देन हैं आज देश की राजनीति, सामाजिकता और धार्मिकता में जो उथलपुथल मची हैं, वह सब बाबा साहेब की सोच का ही परिणाम हैं।

भारतीय दलित साहित्य अकादमी पिछले 20 वर्षो से देश में बाबा साहेब के मिशन और संदेश को हर घर और जन तक पहुंचा रहे हैं। डॉ0बाबा साहेब अम्बेडकर का मूल मंत्र शिक्षित बनो संगठित हो और संघर्ष करों आईयें उनके बताए मार्ग पर चलते हुए हम ज्ञान वान बने एकजुट होकर ताकतवर बने और फिर अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करें जिससे कि हम बाबा साहेब के सपनों का भारत बनाने में सफल रहें जहां न किसी का शोषण हो न उत्पीडन वह भूख भ्रष्टाचार, और अन्याय से मुक्त हो, समता, सम्मान, प्यार, और भृातत्व से भरपूर हो जहां सब मिलजुल कर सुखी रहें

** प्रभारी प्राचार्य एवं सहा. प्रा. राजनीतिशास्त्र शासकीय महाविद्यालय, मंडला*

*** अतिथि सहा. प्रा. अर्थशास्त्र, शासकीय महाविद्यालय, मण्डला, म.प्र.*

संदर्भ ग्रंथ

1. सुमनाक्षर सोहनपाल (2003): दलित साहित्य की हुंकार सात समुन्दर पार भारतीय दलित साहित्य अकादमी दिल्ली पृष्ठ संख्या 53–55 2. चौबे देवेन्द (2001–02): चिन्तिन की परंपरा और दलित साहित्य नव लेखन प्रकाशन दिल्ली पृष्ठ संख्या 25–273. नाईक सीडी (2007) बुद्धत्व के अग्रदूत डॉ0आम्बेडकर कल्पाज पब्लिकेशन दिल्ली पृष्ठ संख्या 8